ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 51 कुल पृष्ठ-8 3 से 9 मार्च, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 फा.कृ.-15

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 85वें जन्मदिवस के अवसर पर

15वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा) में विधिवत रूप से हुआ प्रारम्भ

स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी (हिमाचल) के ब्रह्मत्व एवं मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी के संयोजन में 1 मार्च, 2022 महर्षि दयानन्द बोध दिवस से 13 मार्च, 2022 स्वामी इन्द्रवेश जी के जन्मदिवस तक चलेगा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

13 मार्च को आर्य परिवार सम्मान समारोह का होगा भव्य आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया उद्घाटन

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अमरजीत शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज न्यूयार्क (अमेरिका) कार्यक्रम में पधारे

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 85वें जन्मदिवस के अवसर पर 15वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक 1 से 13 मार्च, 2022 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला–रोहतक हरियाणा में विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति, आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी के ब्रह्मत्व एवं मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी के संयोजकत्व में उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ हुआ।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के उद्घाटन के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पंच महायज्ञों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रत्येक गृहस्थ के लिए पंच महायज्ञ करना अनिवार्य दैनिक कर्म है। परमात्मा के उपकारों का स्मरण करके उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, उसके गुणों – दया, परोपकार, न्यायादि को जीवन में धारण करने के लिए ब्रह्म यज्ञ करना, प्राकृतिक पर्यावरण को ठीक रखने के लिए देवयज्ञ (हवन), माता–पिता की सेवा हेतु पितृयज्ञ, आने वाले विद्वानों की सेवा हेतु अतिथि यज्ञ तथा अन्य प्राणियों की रक्षा हेतु बलिवैश्व देवयज्ञ करना चाहिए। यही ऋषियों का सन्देश है। महायज्ञ में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अंधविश्वास, गौहत्या आदि के विरुद्ध संकल्प के लिए आहुति डलवाई गई।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने महिलाओं एवं दबे–कुचले लोगों के लिए शिक्षा के अधिकारों की सबसे ज्यादा वकालत की। ऋषि दयानन्द जी के आगमन से पूर्व "स्त्री शूद्रो नाधीयाताम्" अर्थात् स्त्री और शूद्र पढ़ने के अधिकारी नहीं हैं, इस तथाकथित श्रुति का प्रचार था। परन्तु ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में घोषणा कर दी कि राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्य समाज के युवा विद्वान महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र अमेरिका निवासी डॉक्टर अमरजीत शास्त्री जी ने कहा कि शिवरात्रि के दिन ऋषि दयानन्द को बोध हुआ और फिर वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना के लिए उनका कार्य प्रारम्भ हुआ। उन्होंने वेद प्रचार, नारी शिक्षा, दलितोद्धार, यज्ञ परम्परा, आजादी का आन्दोलन, धार्मिक अंधविश्वास, गौरक्षा आदि मुद्दों पर कार्य किया। आज यदि मैं अमेरिका जैसे देश में वेद प्रचार कर पा रहा हूँ तो इसका सम्पूर्ण श्रेय गुरुकुल परम्परा की शिक्षा को जाता है। डॉ. अमरजीत शास्त्री जी का आयोजन की ओर से शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर उदार व्यक्तित्व के धनी, दानवीर श्री नरेन्द्र नांदल एडवोकेट ने कहा कि वेद सृष्टि का संविधान है। इसके अनुसार जीवन जीने से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यज्ञ के ब्रह्मा हिमाचल के नूरपुर से पधारे स्वामी वेदप्रकाश जी ने कहा कि आर्य समाज का सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बोध नहीं क्रान्ति

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

महर्षि दयानन्द जन्मना क्रांतिकारी थे। जिसे हम बोधरात्रि कहते हैं, उसमें दयानन्द के मन में क्रान्ति का अंकुर ही फूटा था। बाद में वह अनेक रूपों में पल्लवित हुआ। दयानन्द सामान्य मानव नहीं, अपितु ऋषि को यास्काचार्य कहते हैं- ऋषिदर्शनात। जो दर्शन करे, वह ऋषि है। दर्शन तो सभी करते हैं किन्तु हम केवल वर्तमान का दर्शन करते हैं जबकि ऋषि भूत तथा भविष्य की घटनाओं, तथ्यों को भी प्रत्यक्ष के समान ही देखता है। भर्त्तहरि कहते हैं कि अतीन्द्रिय तथा अचिन्तनीय विषयों को भी ऋषि ऋषित्व बुद्धि से जान लेता है।

महर्षि दयानन्द की अनेक घोषणाएं ऐसी थी जिन पर उस समय विश्वास करना कठिन था किन्तु आज विज्ञान ने उनको सिद्ध कर दिया है। यथा महर्षि दयानन्द ने कहा कि ग्रहों में भी सृष्टि है। विमान के बनाने की बात भी उन्हीं दिनों उन्होंने की थी। आज विज्ञान ने दोनों ही घोषणाओं को सिद्ध कर दिया, जो महर्षि ने अपनी दिव्य ऋषि दष्टि से की थीं। तीसरी घोषणा इससे भी अधिक क्रान्तिकारी है। केवल सामान्य मानव की नहीं अपितु ऊँचे से ऊँचे शिक्षाविद भी डार्विन के इस सिद्धान्त से बुरी तरह प्रभावित हैं कि मानव की उत्पत्ति अमीवा नामक लघुतम जन्तु से हुई है। वहीं अमीवा विकास के अनेक सोपानों को पार करके अन्ततोगत्वा मनुष्य बना। हास्यास्पद सिद्धान्त है तथापि बुद्धिजीवियों ने इसका प्रतिवाद न करके समर्थन ही किया। महर्षि ने भी विचित्र सी घोषणा की कि आदि सृष्टि में पृथिवी के गर्भ से ही युवा मानवों की सृष्टि हुयी। यह अमैथुनी सृष्टि थी। आज विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया कि माता-पिता के संयोग के बिना परखनली इत्यादि के माध्यम से भी मानवोत्पत्ति हो सकती है। महर्षि की उक्त तीनों ही घोषणाएं वैचारिक जगत् में किसी क्रांति से कम नहीं थी। दूसरे देशों में तो इस प्रकार की एक-एक बात पर विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन जाते हैं।

ऋषि को यह दिव्य दृष्टि तो ऋषि बनने के बाद ही मिली होगी किन्तु क्रान्ति के बीज तो उनके मन में जन्म से ही विद्यमान थे। महर्षि की यह क्रान्ति दो रूपों में थी। यह हो सकता है, यह नहीं हो सकता। पत्थर पर चढ़े चूहे को माल प्रसाद खाते देखकर मूलशंकर बोला यह परमेश्वर नहीं हो सकता जो चूहे से भी अपनी रक्षा न कर सके। जब समूचा भारत उस पत्थर में परमेश्वर को मान रहा था, ऐसे में मूलशंकर की यह घोषणा किसी क्रांति से कम नहीं। अभी यह अंकुरित मात्र हुई थी तथा इसका पुष्पित एवं पल्लवित रूप लोगों ने कुम्भ में 'पाखण्ड खण्डिनी' पताका के रूप में देखा।

अब दयानन्द समग्र क्रांति के क्षेत्र में उतर आये। अद्भुत क्रांति थी वह जो कि एक ब्राह्मण ने ब्राह्मण समुदाय के विरुद्ध की। एक साधु ने साधुओं के विरुद्ध की। एक कौपीन धारी दिगम्बर ने बड़े-बड़े अखाड़ों, महन्तों के विरुद्ध की एक विद्वान् ने तात्कालिक विद्वत्समुदाय के विरुद्ध की। एक धर्मनेता ने, धर्मप्रचारक ने अन्य धर्मप्रचारकों के विरुद्ध की। एक समाज सुधारक ने सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध की। इतना ही नहीं, अपितु जिनके शासन में सूर्य नहीं छिपता था, उन अंग्रेजों उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा भारत की पराधीनता के विरुद्ध भी दयानन्द ने क्रांति का बिगुल बजाया।

यह क्रांति दयानन्द ने अकेले की किन्तु निराधार नहीं की। वेद उनका आधार था तथा परमेश्वर सहायक। केवल इन दोनों के बल पर ही दयानन्द ने सभी को परास्त करके दिग्विजय प्राप्त की। पण्डे-पुजारियों, साधु-मंहतों के विरुद्ध दयानन्द ने यों ही शंख नहीं फूंक दिया था अपितु सबके रहस्यों को जानकर ही उनका पर्दाफाश किया था। धर्म के नाम पर चली आ रही विभिन्न कुरीतियों तथा उनके ठेकेदारों, प्रचारकों के विरुद्ध न केवल घोषणाएं अपितु युद्धस्तर पर कार्य करना दयानन्द का ही काम था। बड़े से बड़े दिग्गज पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने का साहस दयानन्द ने किया। बड़ा साहस उन्हें प्रभु से प्राप्त था तथा सत्य पर आधारित था। समस्त पाश्चात्य विद्वानजगत् तथा उनके अनुयायी भारतीय भी कह रहे थे कि वेदों में गप है, अश्लीलता है, इतिहास है, मिलावट है इत्यादि। दयानन्द अकेले ही महान घोष करते हैं- वेद परमेश्वर की वाणी तथा सत्य विद्याओं की पुस्तक है। चार संहिताएं ही वेद हैं, ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है' यह कहकर दयानन्द ने उन वेदज्ञ पण्डितों को निरुत्तर कर दिया जो ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानते थे। इन्हीं दम्भी पण्डितों ने व्यर्थ का शब्द जाल रचकर जो क्लिष्ट ग्रन्थ बना रखे थे, दयानन्द उनका निराकरण यह कह कर करते हैं कि महर्षियों के ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसा कि समुद्र में गोता लगाना तथा मोतियों का पाना। इसके विपरीत अनार्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसे पहाड़ का खोदना तथा कौड़ी का लाभ होना। यह बात पण्डित दयानन्द ने वैसे ही नहीं कही थी अपितु लगभग तीन हजार ग्रन्थों की छान-बीन करके की थी। ऐसी क्रांतिकारी घोषणा करने का साहस उस समय किसी में भी नहीं था।

विद्वत क्षेत्र में उनकी एक अति महत्वपूर्ण घोषणा आर्यो के आगमन के विषय में थी। जान बूझकर एक झूठ को पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रचारित एवं सुप्रतिष्ठित कर दिया गया था कि आर्य भारत में बाहर से आये हैं। यह इतिहास वेत्ता दयानन्द ही था जिसने सप्रमाण कहा कि आर्य भारत के ही मूल निवासी हैं। किसी भी प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य बाहर से आये हैं। एक इतिहासज्ञ पुरातत्ववेता तथा विद्वान की भांति उन्होंने यह भी कहा कि आदि सृष्टि तिब्बत पर ही हुयी थी। आज इतिहास वेत्ता भी इस बात को सिद्ध कर रहे हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का समस्त जीवन, उनकी स्थापनाएं, उनके कार्यों पर दृष्टिपात करें तो यही पायेंगे कि दयानन्द जन्मजात क्रांतिकारी रहे। प्रत्येक क्षेत्र में जो नयी मान्यताएं तथा घोषणाएं उन्होंने की उनकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता था। दयानन्द क्योंकि पारदृष्टा ऋषि थे इसलिए उन्होंने भूत भविष्य तथा वर्तमान सभी पर दृष्टिपात करके स्पष्ट रूप में कहा- ऐसा है, ऐसा नहीं है। यह ठीक है, यह गलत है इत्यादि। शिवपिण्डी के विषय में भी बालक मूलशंकर ने यही कहा था- यह परमेश्वर नहीं हो सकता। बालक मूलशंकर का यह कदम अति साहसिक एवं क्रांतिकारी कदम था।

- बी.–266, सरस्वती विहार
दिल्ली–34, मो.:– 9868144317

ओ३म्

दो आंसू

- कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था
जिन्हें दुनिया में वैदिक धर्म का विस्तार करना था
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें निज देश और जाति का बेड़ा पार करना था
उन्हें देखो कि बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं
समाजों को मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।

जमाना रश्क करता था कभी वो प्यार था हममें
हर इक इक दूसरे का मूनिसो गमख्वार था हममें
धर्म पर जान देने को हर इक तैयार था हममें
बला का जोश था और जज्बये ईसार था हममें
मगर अब आर्यो में नाम को उल्फत नहीं मिलती
न वो श्रद्धा, न वो भक्ति है वो हिम्मत नहीं मिलती।

निकलते थे जो हम शानों पै वेदों के अलम रखकर
फरिश्ते भी फिदा होते थे उस पुरजोर मंजर पर
जला देते थे हम दुश्मन के खिरमन को कलम रखकर
हटाते ही न थे पीछे कभी आगे कदम रखकर
नमस्ते लब पै आते ही मुखालिफ चौंक पड़ते थे
'समाजी' नाम से पाखंडियों के होश उड़ते थे।

समाजों की मगर अब रात-दिन तहकीर होती है
रवां गर्दन पै रोज अगयार की शमशीर होती है
न वो तहरीर होती है, न वो तकदीर होती है
जो होती है तो हर इक बात बे-तासीर होती है
न वो लेखक रहे हममें, न वो तक्कार हैं बाकी
कि इस गुलशन के गुल मुरझा गए अब खार हैं बाकी।

ऋषि किस्मत से फिर इक बार यदि भारत में आ जाएं
रुखे अनवर 'मुसाफिर' आके फिर इक बार दिखलाएं
हमारे दम्भ को देखें और इस आचार पर जाएं
तो सच कहता हूँ गैरत से बिना ही मौत पर जाएं
पदों की लालसा में रोज लड़ते और लड़ाते हैं
अदायें शासकों की हैं मगर सेवक कहाते हैं।

उठो अब आर्य वीरों फिर से अपना संगठन करके

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

85वें जन्मदिवस पर विशेष

कीर्तिर्यस्य स जीवति

आर्य राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा
स्वामी इन्द्रवेश जी

– स्वामी आर्यवेश

जन्म–१३ मार्च, १९३७
जन्मस्थान–ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता– श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :–

सन् १९६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १९६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १९६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १९६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १९६९ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १९७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१९७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १९७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १९७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १९७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १९७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १९८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १९८६ में राजीव–लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १९६२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १९६३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :–

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य–व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम–प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १९७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला

रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १९८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओमवेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगढ़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने–अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १९८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १९८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १९६६ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

९. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १९८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १९६७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधयक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओमवेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन–रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक–एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथि पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

– प्रधान, सार्वदेशिक सभा

ग्राम–धनौरा (टिकरी) जिला–बागपत (उ. प्र.) में आर्य सम्मेलन एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सैकड़ों लोगों ने नशा छोड़ने का लिया संकल्प

दिनांक 18, 19 एवं 20 फरवरी, 2022 को ग्राम–धनौरा (टिकरी), जिला–बागपत (उ. प्र.) में सामवेद पारायण यज्ञ एवं आर्य सम्मेलन का विशाल आयोजन किया गया। इस आयोजन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्री अमित शास्त्री एवं श्री अरूण आर्य, श्री घनश्याम प्रेमी व उनके सुपुत्र श्री भूपेन्द्र आर्य, श्रीमती सविता आर्या एवं मनीषा आर्या आदि उपदेशक एवं भजनोपदेशक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। 20 फरवरी, 2022 को यज्ञ की पूर्णाहुति एवं कार्यक्रम का समापन क्षेत्र में नशे के विरुद्ध अभियान चलाने के संकल्प के साथ हुआ।

इस अवसर पर समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं अन्धविश्वास, यज्ञ की महिमा एवं मनुष्य जीवन की सार्थकता आदि विषयों पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। उन्होंने कहा कि वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता विद्यमान है। अवैदिक मान्यताएँ मनुष्य को अंधेरे की ओर ले जाती हैं। मनुष्य का उद्देश्य है अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना, अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर होना। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि अवैदिक मान्यताओं ने अपना ऐसा जाल फैला दिया है कि उसके विरुद्ध युद्ध स्तर पर प्रचार अभियान चलाने के अतिरिक्त कोई समाधान नजर नहीं आता। लोगों को जागरूक करने के लिए ऐसे यज्ञ एवं सम्मेलनों का आयोजन अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने बताया कि समाज में बड़े–बड़े पदों पर बैठे हुए लोग पाखण्ड, अन्धविश्वास तथा अज्ञान फैलाने में अपने पूरे प्रभाव का प्रयोग कर रहे हैं। सामान्य जनता बड़े स्तर के लोगों का अनुशरण करके पाखण्ड में संलिप्त है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलने के लिए लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। आर्य समाज इस कार्य को भली प्रकार से कर रहा है किन्तु इसे और तेज करना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता पुरुषार्थ चतुष्टय का पालन करने में बताई। उन्होंने कहा कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए धर्म का आचरण धर्मानुसार अर्थोपार्जन तथा धर्मानुसार ही अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने वाला व्यक्ति मोक्ष की ओर जा सकता है। आज दुनिया में धर्म की परिभाषा कुछ कर्मकाण्ड एवं रूढ़ियों का अनुशरण करना बन गई है। मनुष्य अर्थोपार्जन और जीवन की कामनाओं को पूरा करने के लिए अधर्म एवं अनैतिकता का सहारा लेता है जो उसकी आत्मा को पतन की ओर ले जाता है। धर्म की परिभाषा करते हुए महर्षि मनु ने कहा है कि – 'धृति क्षमा दमोस्तेयं, शौचं इन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो, दसकम् धर्म लक्षणम्।' अर्थात् धर्म के उपरोक्त दस लक्षण हैं। जिनका पालन करना और आचरण में लाना ही धर्म को आत्मसात करना है। इसी प्रकार महर्षि याष्क ने कहा है कि – 'यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिःस धर्मः।' अर्थात् जिससे मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो वही धर्म है। वर्तमान समय में कर्मकाण्डों तथा विविध तर्कहीन क्रियाओं को ही धर्म समझा जा रहा है, जो गलत है। यदि मनुष्य को अपने जीवन में उन्नति करनी है तो उसे धर्म के सच्चे स्वरूप को समझकर अपने आचरण में लाना होगा। धर्म का सामान्य अर्थ कर्त्तव्य पालन भी है। अर्थात् जो व्यक्ति अपने जीवन में अपने कर्त्तव्यों का सही निर्वहन करता है, अन्धविश्वास एवं पाखण्ड में न उलझकर परोपकार, सेवा, निराकार ईश्वर की उपासना एवं सभी प्राणियों के प्रति मित्र भाव रखता है वही धार्मिक है।

आर्य समाज धर्म को औरों के प्रति सह्रदयता, सहिष्णुता एवं सौहार्द उत्पन्न करने का सर्वोत्तम व्यवहार मानता है। धर्म का मूल है – 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेशान समाचरेत्' अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को औरों के साथ वह व्यवहार करना चाहिए जो आपकी आत्मा के अनुकूल हो। इसलिए आत्मा के प्रतिकूल व्यवहार औरों के साथ भी नहीं करना चाहिए।

श्री घनश्याम प्रेमी के भजनों का कार्यक्रम भी अत्यन्त प्रभावशाली रहा और उन्होंने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। यज्ञ के आचार्य श्री अमित शास्त्री व उनके सहयोगी श्री अरूण आर्य ने जहां सुन्दर वेद पाठ किया वहीं ईश्वर भक्ति के गीतों से भी लोगों को आनन्दित किया। इस पूरे कार्यक्रम के आयोजक के रूप में जहां आर्य समाज धनौरा के सभी पदाधिकारी मुख्य रूप से सारी व्यवस्था को संभाल रहे थे वहीं ग्रामवासियों का भी विशेष सहयोग रहा। इस कार्यक्रम के संयोजन में ब्र. सहंसरपाल आर्य एवं श्री अंकित शास्त्री ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और दूर–दूर तक लोगों को सूचना देकर आमंत्रित किया। कार्यक्रम के लिए लोगों से सम्पर्क किया और सभी उपदेशकों और कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया। इसके परिणाम स्वरूप दूर–दूर से प्रतिष्ठित आर्यजन इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में कुछ विशिष्ट जनों का अभिनन्दन भी किया गया जिसमें श्री प्रेम सिंह रिटायर्ड ए.डी.ओ., गाँव के सबसे बुजुर्ग श्री ताराचन्द एवं श्री मनोज आर्य बड़ौदा निवासी को स्मृति चिन्ह, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त क्षेत्र के विविध स्थानों से पधारने वाले सभी महानुभावों को महर्षि दयानन्द जी का एक चित्र भेंटकर सम्मानित किया गया। इस सामवेद पारायण यज्ञ में यजमान के रूप में मुख्य रूप से श्री विनोद आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोनिका, श्री अंशु वैद्यवान व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीनाक्षी, श्री अनुज वैद्यवान व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पारूल के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम में सर्वश्री नरेन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज धनौरा, श्री राज सिंह, श्री जल सिंह, श्री अजयवीर, श्री आचार्य सुनील, श्री लेकचन्द, मा. अमित सुपुत्र श्री विजेन्द्र, श्री ओमवीर डीलर, श्री सोहन वीर, श्री अनुज, मा. प्रेम सिंह, श्री धर्मपाल प्रधान जी, श्री रामवीर, श्री वीर नारायण, श्री तेजपाल सिंह 'नेता जी', श्री प्रेमचन्द सिसौली, श्री बलवीर सिंह आर्य सिसौली, श्री सुखपाल बिटावदा, श्री सोमपाल आर्य मुलसम, श्री पप्पू आर्य निरपुणा, श्री अनंगपाल तबेलागढ़ी, श्री बॉबी प्रधान व श्री प्रमोद (भाजू), श्री सचिन आर्य जटमुझेड़ा, श्री मनोज वर्मा कादराबाद, श्री बिल्लू प्रधान गेडपुरा, श्री संजय आर्य दिल्ली, श्री अवनीश आर्य एवं श्री राजेन्द्र आर्य रठौड़ा, प्रिं. रामपाल सिंह बड़ौत, श्री हरपाल आर्य निरपुणा, डॉ. चन्द्रपाल व श्री संजीव पंवार आर्य समाज बुढ़ाना, श्री विवेक फौजी चिन्दौड़ी, श्री राजेन्द्र आर्य निरपुणा, श्री सुधीर कुमार सहारनपुर, श्री राम कुमार डूंगर, श्री मदन कुमार भौरा खुर्द, ज्योति आर्य, श्री देवेन्द्र आर्य एवं श्री प्रवीण फौजी भौरा कलां, मा. राजेन्द्र व श्री वीरपाल लाख, श्री सोहनवीर इटावा, श्री समेसिंह चिन्दौड़ी, श्री सोमपाल रांणा, श्री देवेन्द्र रांणा व श्री यशवीर रांणा दाहा, श्री बालकराम बड़ौदा, श्री सचिन सिरसली, श्रीपाल आर्य खेड़ी पट्टी, श्री जयपाल व श्री कृष्णपाल मुलसम, श्री लोकेश जी प्रधानाचार्य जवाहर कृषक इण्टर कॉलेज धनौरा व उनके छात्र–छात्राएँ, प्रो. देवेन्द्र पाल सिंह तोमर विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र जनता कॉलेज बड़ौत, प्रिं. रुक्मपाल सिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस स्कूल तमेला गढ़ी एवं डी.ए.वी. स्कूल शास्त्रीनगर मेरठ से अपने छात्र–छात्राओं के साथ डॉ. विनीत त्यागी, श्री प्रवेश डबास, श्री वीर चौहान, श्री योगेश ऋषि व श्री मुकेश जी आदि महानुभाव इस कार्यक्रम में पधारे और अपनी उपस्थिति से इस आयोजन की शोभा बढ़ाई। यह सम्मेलन क्षेत्रीय सम्मेलन के रूप में आयोजित हुआ और सैकड़ों आर्यजनों ने पूरे क्षेत्र में नशाखोरी, अश्लीलता, गोहत्या आदि बुराईयों के विरुद्ध कार्य करने का संकल्प लिया। आयोजन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यानों को प्रबुद्ध श्रोताओं ने बड़ी श्रद्धा के साथ सुना और कई आर्य समाजों के अधिकारियों ने अपने कार्यक्रमों में स्वामी जी को आने के लिए निमंत्रण दिया। ब्र. सहंसरपाल एवं श्री अंकित आर्य को विशेष साधुवाद देते हुए स्वामी जी ने कार्यक्रम की सफलता के लिए उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और आश्वासन दिया कि पूरे क्षेत्र में आर्य समाज के कार्य को तीव्र गति से बढ़ाने में अपना पूरा सहयोग करेंगे। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

4 मार्च को गुरुकुल कांगड़ी स्थापना के अवसर पर

आओ लौटें गुरुकुलों की ओर

स्वामी आदित्यवेश

महाभारत से पहले विद्यार्जन के लिए एकान्त में आश्रम हुआ करते थे उसको गुरुकुल, ऋषिकुल, आचार्यकुल इत्यादि नामों से पुकारते थे। वहाँ राजामहाराजा से लेकर निर्धन परिवार के सभी बालक विद्यार्थी के रूप में शिक्षा ग्रहण करते थे। सोलह संस्कारों में उपनयन और वेदारम्भ संस्कार आचार्य कराकर शिक्षा देते थे और शिक्षा जब पूर्ण हो जाती थी तब उनको राज्य सेवा, समाज सेवा आदि के लिए अनुमति देकर घरों को भेज देते थे। परन्तु विशाल महाभारत युद्ध के कारण प्राचीन ऋषि–मुनियों की परम्पराएं नष्ट हो गयीं। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति दोषपूर्ण हो गयी। कालान्तर में अनेक प्रकार की शिक्षाएं, संस्कृतियाँ एवं सभ्यताएँ यत्र–तत्र प्रचारित हुई। अंग्रेज का भारत पर राज हो गया। जब कोई विदेशी राज्य गुलाम बनाए देश में स्थिर रूप से जमना चाहता है तब सबसे पहले प्रचलित शिक्षा पद्धति को नष्ट कर अपने ढंग की शिक्षा पद्धति को जनता पर थोपने लगता है। अंग्रेज ने इस देश में आकर यही किया। लॉर्ड मैकाले ने जब भारत में प्रचलित शिक्षा पद्धति के स्थान पर ब्रिटेन की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को जारी किया तब उसने बड़े अभिमान से पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को विशेष बताते हुए कहा कि इससे भारत में एक ऐसा वर्ग पैदा हो जाएगा जो रंग से काला होते हुए भी दिल से ब्रिटिश भक्त होगा। लेकिन परमेश्वर की कृपा से भारत की धरती पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आविर्भाव हुआ। जिन्होंने घूम–घूम कर सभी प्रकार की समस्याओं का अध्ययन कर इतिहासों में वर्णित ऋषि परम्पराओं का सिंहावलोकन किया एवं वेदादि शास्त्रों के लिए गुरुकुलों की स्थापना की बात कही और जनमानस को यह सन्देश दिया कि मानवता हमारे प्राचीन गुरुकुलों की ही देन हैं। किन्तु आज अनेक प्रकार की शिक्षाओं से प्रभावित होकर अधिकांश लोग अपने बच्चों को गुरुकल में भेजने से हिचकिचाते हैं। उन्होंने सम्पूर्ण देश को बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगीराज श्रीकृष्ण गुरुकुलों में पढ़कर ही यश के भागी बने हैं। यदि बच्चों में मानवता व सदाचार का निर्माण करना है तो उत्तम शिक्षा हेतु गुरुकुलों की स्थापना हो तथा अपने बच्चों को गुरुकुलों में भेजें। क्योंकि ऋग्वेद का वचन हमें यह बताता है कि– 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।" हे

मानव! तू मनुष्य बन और अपनी सन्तान को मनुष्य बना। इसलिए सबसे पहले हमें मनुष्य बनने की साधना करनी पड़ेगी। फिर मानवता का संचार होगा, और यह तभी सम्भव होगा जब हम गुरुकुलों की ओर लौटेंगे। वाणी और लेखनी द्वारा प्रचार के अतिरिक्त नई पीढ़ी को सद् उद्देश्य की ओर प्रेरित करने तथा धार्मिक संस्कृति को राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत करने के लिए गुरुकुलीय शिक्षण संस्थाएँ प्रमुख साधन होती हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द ने इस गुरुकुल परम्परा को पुनर्स्थापित करने का संकल्प लिया। स्वयं महर्षि दयानन्द ने काशी, फरुखाबाद व हाथरस में संस्कृत पाठशालाएँ खोलीं, लेकिन किन्हीं कारणों से वो बंद हो गई। लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस पुत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनके इस स्वप्न को मूर्त रूप देने का कार्य किया 4 मार्च 1902 को गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को चुनौती देते हुए प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति को समर्पित मानव निर्माण केंद्र के रूप में देश के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। उसके बाद देश में गुरुकुलों की स्थापना का सिलसिला प्रारम्भ हुआ।

"मानव का जन्म लेना सरल है परन्तु मानवता के पथ पर चलना कठिन है।' जब कोई अपनी माँ की पवित्र कोख से जन्म लेता है तब हम उसको नवजात शिशु की संज्ञा प्रदान करते हैं जब वही बालक बड़ा होता है तब उसको मानव की संज्ञा से अलंकृत करते हैं। संसार में तीन प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं, पहले वे हैं जो खाओ और मौज उड़ाओ इसको ही जीवन समझते हैं, और वे कहते हैं कि यह विश्व हंसने नाचने गाने के लिए विधाता ने बनाया है। दूसरे वे लोग जो कामवासना को पूर्ण करना और सुरापान करते हुए मर जाना ही मुक्ति समझते हैं। तीसरे वे लोग जो इन उपयुक्त दोनों बातों से पृथक एवं संयमी हैं। ये लोग दु:ख से अत्यन्त निर्वृत्ति को ही मुक्ति समझते हैं। इनमें पहले और दूसरे प्रकार के लोग दानव की श्रेणी में आते हैं। तीसरे प्रकार के लोग जो देवत्व की गणना में आते हैं। मनुष्य बीच की स्थिति में हैं। मानवता से गिरा तो दानव बन गया तथा मानवता से युक्त हो गया तो देवता बन गया। दानव को मानव बनाने वाले आर्य समाज के 10 नियम हैं। पहले के दो नियम ईश्वर के सम्बन्ध में हैं बीच के 3, 4, 5 मनुष्य के निर्माण के लिए हैं जिसके अनुसार स्वयं बनना है तथा अन्तिम के पांच नियम, हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह सिखाते हैं। बस उन नियमों पर चलना और जीवन में ढालना ही मानवता के लिए हितकारी है। यह सब शिक्षा व प्रेरणा गुरुकुलों से ही सम्भव है। इसलिए इन गुरुकुलों को मानव निर्माण व संस्कृति रक्षा का केंद्र माना जाता है। इसलिए आज जहाँ देश की सरकारों को इस पद्धति को और ज्यादा ताकत देने की आवश्यकता है वहीं आर्य समाज के नेताओं व कार्यकर्ताओं को भी इस महत्त्व को देश व दुनिया के सामने रखने की आवश्यकता है। देश के प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वो अपनी संतान को गुरुकुलों में शिक्षा दिलवाए तथा अपनी संस्कृति व वैदिक सनातन परम्परा को सुरक्षित रखने में अमूल्य योगदान प्रदान करना चाहिए।

– विद्यार्य सभा गुरुकुल कांगड़ी के उप मंत्री व गुरुकुल धीरणवास (हरियाणा) के प्रधान हैं।

मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा आयोजित छात्रवृत्ति एवं अभिनंदन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनांक 27 फरवरी, 2022 को ग्राम नौल्था, पानीपत, हरियाणा में स्थित परम साध्वी लक्ष्मी देवी समाधि स्थल पर मानव सेवा प्रतिष्ठान के माध्यम से अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रातः 9:00 बजे पर्यावरण शुद्धीकरण हेतु एवं स्व. श्री जयभगवान जागलान एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी जागलान को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी के नेतृत्व में यज्ञ हवन का शुभारंभ हुआ, जिसमें सैकड़ों लोगों ने आहुति प्रदान करके चौ. जय भगवान जागलान एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इसके पश्चात् मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चंद्रदेव शास्त्री, उपमंत्री श्रीमती कमलेश देवी, वरिष्ठ सदस्य चौ. बलजीत सिंह सांगवान के नेतृत्व में सम्मान समारोह का शुभारंभ हुआ, जिसमें आर्य जगत की महान विदुषी समाज सेवी शिक्षा जगत में ख्याति प्राप्त स्त्री शिक्षा में संलग्न डॉक्टर राजबाला आर्या संस्कृत प्रवक्ता आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा, करनाल को शिक्षा जगत में किये गए कार्यों एवं नौल्था ग्राम के प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त पहलवान सागर जागलान को कुश्ती जगत में प्राप्त की गई उपलब्धियों के कारण मानव सेवा प्रतिष्ठान ने शाल, सम्मान पत्र व धनराशि देकर जागलान परिवार की स्मृति मे सम्मानित किया। इस अवसर पर कन्या गुरुकुल एचराकला जीन्द की छात्राओं ने सुमधुर भजनों के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री चंद्रदेव शास्त्री प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं कार्यकारिणी के द्वारा कन्या गुरुकुल एचराकलां, जीन्द, कन्या गुरुकुल पाढा, करनाल सहित अनेक विद्यालयों की छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। मानव सेवा प्रतिष्ठान पिछले 23 वर्षों से अनेक सामाजिक कार्यों में संलग्न है। हर वर्ष सैकड़ों छात्र–छात्राओं को लाखों रुपए का सहयोग छात्रवृति के रूप में प्रतिष्ठान के द्वारा देकर उन्हें शिक्षित–दीक्षित करके उनका उत्साहवर्धन किया जाता है। समाज में प्रतिष्ठित एवं समाजसेवी महान विभूतियों को मानव सेवा प्रतिष्ठान हर वर्ष सम्मानित करती है। ग्राम–नौल्था के समाधि स्थल पर आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. अमर कौर आर्या, करनाल, श्रीमती सुनीता चौधरी प्रिंसिपल आर्य कन्या गुरुकुल एंचराकला, मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, श्री बलजीत सिंह सांगवान के अतिरिक्त अनेक वक्ताओं ने सभा को सम्बोधित किया। डॉ. राजबाला आर्या एवं पहलवान सागर जागलान के द्वारा अभिनंदन के पश्चात् प्रतिष्ठान का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

– डॉ. कवर सिंह शास्त्री, महामन्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान

स्वास्थ्य चर्चा

रोगों के जाल में फंसता मानव

– डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी

वर्तमान जीवनशैली में मनुष्य पहले से ही इतने रोगों से घिरा है कि उसे और रोगों की कोई आवश्यकता ही नहीं है किन्तु हमारे समाज के अनेक शक्तिशाली उद्योग ऐसे हैं जो मनुष्य को नए रोगों का उपहार देने में जुटे हैं। मनुष्य को निरंतर यह भरोसा दिलाया जाता है कि उसे कोई रोग है जिसका इलाज होना परमावश्यक है।

इस प्रयास को 'डिज़ीज मॉन्जरिंग का नाम दिया गया है। डिजीज मॉन्जरिंग एक स्वस्थ व्यक्ति के मन में यह भय पैदा कर देती है कि वह किसी न किसी रोग से ग्रस्त है। जो व्यक्ति छोटी-मोटी बीमारियों जैसे-खांसी, जुकाम वगैरह से पीड़ित है, उसे यह एहसास कराया जाता है मानो उसे कोई भयंकर रोग लग गया हो जिसका इलाज होना शत-प्रतिशत आवश्यक है। इस रणनीति को रे मॉयनिहान, इयोना हेथ और डेविड हेनरी ने ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में 'कॉरपोरेट कंस्ट्रक्शन ऑफ डिजीज' का नाम दिया है। इनके अनुसार रोगों के बारे में झूठी व भ्रामक धारणाएं प्रचारित की जाती हैं ताकि स्वस्थ लोगों को बीमार बताकर बहुत सा पैसा बनाया जा सके। यही कारण है कि दवा कंपनियाँ नई-नई बीमारियां और उनकी दवाएं बनाकर अपने ग्राहकों की संख्या बढ़ाने में सक्रिय रूप से काम कर रही हैं।

डिज़ीज मॉन्जरिंग की शुरुआत 1879 में लिस्ट्रिन के आविष्कार से हुई जो मूल रूप से एक शल्य एंटीसेप्टिक है। इसका नाम प्रसिद्ध अंग्रेजी सर्जन जोजेफ लारेंस लिस्टर (जिन्होंने पहली एंटीसेप्टिक शल्य प्रक्रिया का प्रदर्शन किया था) के नाम पर रखा गया। जल्द ही लिस्ट्रिन के आविष्कारक डॉ. जोजेफ लारेंस लिस्टर और जॉर्डन वी लैंबर्ट इसे एक फर्श साफ करने वाले क्लीनर और प्रमेह (गोनोरिहा) के इलाज के रूप में बेच रहे थे। 1895 में वे इसे दांतों और सांस की बदबू के इलाज के रूप में दंत-चिकित्सकों को बेच रहे थे। 1914 तक अमेरिका में लिस्ट्रिन एक ओवर द काउंटर माउथवॉश के रूप में प्रचलित हो चुकी थी। 1920 के दशक तक लंबार्ट फार्मासिल कंपनी, लिस्ट्रिन निर्माता को विश्वास हो गया कि उन्हें एक 'इलाज' मिल गया है। अब जरूरत थी तो केवल 'बीमारी' की और एक नई बीमारी ईजाद की गई जिसका नाम 'हैलीटोसिस' रखा गया। 'हैलीटोसिस', मुंह की दुर्गंध के लिए एक अस्पष्ट मेडिकल टर्म था, जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी थी। विज्ञापनों द्वारा लिस्ट्रिन को हैलीटोसिस की एकमात्र चिकित्सा के रूप में दर्शाया गया। विज्ञापनदाताओं ने हैलीटोसिस को एक ऐसी बीमारी बताया जो किसी भी व्यक्ति के करियर, रोमांस और वैवाहिक जीवन में असफलता का कारण बन सकता है। फिर क्या था, जल्द ही अमेरिका के 90 प्रतिशत लोग हैलीटोसिस नामक बीमारी से ग्रसित हो चुके थे।

चिकित्सा उद्योग जानता है कि उसे अधिक से अधिक लाभ पाने के लिए आम व रोजमर्रा के अनुभवों को चिकित्सकीय रूप देना होगा। उसे हर एक भावना, व्यवहार, आदत और मूड के बदलाव को एक बीमारी या विकृति के रूप में दर्शाना होगा, जिसका रासायनिक उपचार जरूरी होगा। उनकी इस योजना के अनुसार एक सामान्य परिस्थिति को इस तरह से बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की जरूरत थी जिससे वह एक भयंकर बीमारी लगने लगे। साथ ही उन्हें यह एहसास करा देना था कि यदि समय रहते इसका इलाज न किया गया तो वह पीड़ित की व्यक्तिगत प्रसन्नताओं और सफलताओं की संभावनाओं तक को बर्बाद कर सकता है। ये वास्तविक जीवन परन्तु अस्पष्ट परिस्थितियों को इस तरह से दर्शाते हैं कि अधिकांश जनसंख्या मानने लगे कि वे इस बीमारी से ग्रस्त हैं। यह विचित्र परन्तु सत्य है कि लोगों के लक्षणों को जब किसी विकार या बीमारी के नाम से जोड़ा जाता है तो उन्हें एक आराम या सुकून का एहसास होता है। उन्हें मानसिक तौर पर संभालना आसान हो जाता है। उन्हें लगता है 'मुझे फलां-फलां बीमारी है और भगवान का शुक्र है कि फलां-फलां दवाई सिर्फ मेरे लिए ही बनी है।'

अपने किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद पुरानी दिनचर्या में केवल दो सप्ताह में वापस आना कदापि संभव नहीं है।

दुख या शोक एक व्यक्तिगत अनुभव है तथा अधिकांश लोगों में शोक की अवधि दो से छह माह या कभी-कभी उससे भी ज्यादा की होती है। हमारे अत्यंत प्रियजन की मौत के पश्चात् शोक मनाने की यह एक सामान्य अवधि तथा प्रक्रिया है।

लेकिन अमेरिकन साइकायट्रिक एसोसिएशन (एपीए) इस प्रकार के शोक और गम कोएक मानसिक रोग का जामा पहनाने वाली है जिससे कि चिकित्सकों को बढ़ावा मिले कि वे दो सप्ताह से अधिक समय के शोक को एक मानसिक रोग का नाम दे सकें।

'शोक' को एक मानसिक रोग का सर्टिफिकेट देने से यह एक दवा द्वारा ही ठीक किया जाने वाला तथा बिल बनाने वाला रोग बन जायेगा। फिर यह इंश्योरेंस कंपनी द्वारा क्लेम किया जा सकेगा तथा हमारे हेल्थ रिकॉर्ड में एक कलंक के रूप में झलकता रहेगा।

अमेरिकन साइकायट्रिक (एपीए) के प्रस्तावित वर्गीकरण के अनुसार दो सप्ताह से अधिक मनाए जाने वाले शोक को 'एक मानसिक रोग' के रूप में डायग्नोस्टिक और स्टैटिस्टिकल मैन्युअल (डीएसएम-5) के अगले संस्करण में शामिल कर लिया जायेगा।

डायग्नोस्टिक मैन्युअल के संस्करण-4 (डीएसएम-4) के अनुसार दुखी होना, नींद न आना और रोना, शोक के हल्के-फुल्के लक्षणों में शामिल हैं। डीएसएम-4 की गाइडलाइंस में एक सामान्य शोक तथा प्रमुख अवसाद के लक्षणों के बीच स्पष्ट अंतर बताए गए हैं।

रिचर्ड फ्राइडमैन (एमडी), द न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडीसिन के लिए लिखते हुए कहते हैं कि डीएसएम-5 के नए मापदंड उन स्वस्थ लोगों (जो जरा सा परेशान या दुखी हैं) को एक उत्तम उम्मीदवार बना देते हैं जिन्हें एंटीडीप्रेसेंट तथा अन्य मानसिक रोगों को दूर करने वाली दवाइयां लिखी जा सकती हैं। रिचर्ड के अनुसार यह डीएसएम-5 दवा कंपनियों के लिए एक वरदान साबित होगा क्योंकि यह अनावश्यक एंटीडीप्रेसेंट्स और एंटीसाइकोटिक्स के प्रयोग को बढ़ावा देगा जो कि प्रमुख रूप से अवसाद और उत्कंठा के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।

रिचर्ड इस बात की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता है कि अमेरिका में प्रत्येक वर्ष 2.5 मिलियन लोगों की मौत होती है और इनकी वजह से शोक में डूब जाने वाले लोगों की संख्या इससे भी कहीं अधिक है। ये वही शोकग्रस्त लोग है जिनका इलाज करके दवा कंपनियां लाभ उठाना चाहती हैं। इसके लिए चिकित्सकों को अमेरिकन साइकायट्रिक एसोसिएशन (एपीए) और उनके द्वारा बनाए गए नए मापदंडों को धन्यवाद देना होगा।

रोग जिन्हें तिल का ताड़ बना दिया जाता है :

एपीए को समुचित रूप से अमेरिकन साइकोफार्माकोलोजिकल एसोसिएशन कहा जाना चाहिए क्योंकि वे सभी मानसिक बीमारियों का इलाज केवल और केवल दवाइयों को ही मानते हैं तथा दवाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं। एक दुखद खबर यह भी है कि एपीए नई-नई बीमारियों का आविष्कार करने में दवा उद्योग के साथ क्रमबद्धता से काम कर रही है जो कि समय-समय पर मेडीकल साहित्य में शामिल की जाती है।

उदाहरणस्वरूप

अगर आप बहुत ज्यादा शॉपिंग करते हैं तो आपको 'कंपल्सिव शॉपिंग डिस्ऑर्डर' है।

अगर आपको गुणा करते हुए परेशानी होती है तो आपको 'डिस्कैलकुलिया' हो सकता है।

अगर आप वेब सर्फिंग में ज्यादा समय व्यतीत करते हैं तो आप 'इंटरनेट एडिक्शन डिस्ऑर्डर' से ग्रस्त हैं।

जिम में ज्यादा वर्कआउट का मतलब है कि आप बायगोरेक्सिया या 'मसल डिस्मोर्फिया' से पीड़ित हैं।

अगर आपको नंबर 13 से डर लगता है तो संभवत: आपको ट्रिस्काइडेका फोबिया है।

ये नई-नई बीमारियाँ अगर ज्यादा से ज्यादा लोगों में पाई जाने लगीं तो डीएसएम के अगले अंकों में शामिल हो जायेंगी। किसी भी व्यवहार या विकार पर अगर दवाईयों का असर पड़ता है तो वह निश्चित रूप से एक व्याधि या रोग मान ली जायेगी और डीएसएम में स्वत: ही शामिल कर ली जायेगी। डीएसएम में शामिल 297 मानसिक रोगों में से कोई एक भी रोग ऐसा नहीं है, जो कि वस्तुनिष्ठ तौर पर मापा जा सके। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ये रोग पूरी तरह से विषयपूरक हैं।

एक साइकियाट्रिक पैनल में बैठकर मनमाने ढंग से डीएसएम में दिए गए मानसिक विकारों के लक्षणों को बीमारियों में परिवर्तित कर दिया जाता है। उनका कोई मानक और मापदंड नहीं होता। मतलब साफ है। ये लोग दवाईयों के हिसाब से नई-नई बीमारियों का आविष्कार कर रहे हैं, न कि बीमारियों के लिए दवाइयों का।

आज किसी भी मनोवैज्ञानिक से मिलने का मतलब है कि आप एक मनोरोगी हैं और आपका एक असामान्य व्यवहार भी एक विकृति या रोग के रूप में देखा जायेगा। इस बात की शत-प्रतिशत संभावनाएं हैं कि आप किसी मनोवैज्ञानिक के क्लीनिक से एक मनोरोगी का पदक लेकर ही बाहर आयेंगे और आपके हाथ में आवश्यक रूप से बहुत लंबी दवाइयों का चिट्ठा होगा। आपके व्यवहार को किस प्रकार सामान्य किया जाये और किस प्रकार आप अपनी जीवनशैली में कुछ बदलाव लाकर खुद को सामान्य कर सकते हैं। यह सिखाने की बजाए कोशिश यही रहती है कि आपको एक आसान सा तरीका बता दिया जाए और वह है, दवाइयों का सेवन। यह तरीका असान ही नहीं अपितु उनके लिए लाभदायक और आकर्षक भी है क्योंकि इसके साथ ही मनोवैज्ञानिकों के भविष्य की अनेक लाभदायक संभावनाएं जुड़ी हैं।

मनुष्य के अलग-अलग प्रकार के आचार और व्यवहारों को एक मानसिक बीमारी का रूप देने का यह फंडा दवा कंपनियों के लिए कामधेनु साबित हुआ है। मार्केटिंग प्रोफेशनल विंस पैरी ने इसे एक कला का नाम दिया है, 'द आर्ट ऑफ ब्रांडिंग ए कंडीशन।'

उनका कहना है कि हर दशक में डीएसएम के बढ़ते आकार से यह यकीन और भी प्रबल होता जाता है कि संसार पहले से भी ज्यादा अस्थिर हो गया है। शायद यही वजह है कि हमें यह जानकर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होता कि इन नई-नई बीमारियों के आविष्कार व उनके प्रचार में दवा कंपनियों का सीधा पैसा लगा हुआ है, चाहे वह कोई शोध हो या फिर उसका प्रचार।

इससे भी ज्यादा निंदनीय बात क्या हो सकती है, जब अमेरिकी साइकायट्रिक एसोसिएशन का एक भूतपूर्व मुखिया यह मानता है कि एपीए द्वारा डीएसएम में की गई कुछ असावधानियों और गलतियों का नतीजा बहुत ही बुरा हो सकता है। ऐसी कई असावधानियों की वजह से सैकड़ों बच्चों और वयस्कों पर एक 'मानसिक रोगी' होने का गलत लेबल लग चुका है और मानसिक रोगों का एक ऐसा संक्रमण फैल गया है, जिनका वास्तव में कोई अस्तित्व ही नहीं था।

मासूम बच्चों पर निशाना बड़ी दवा कंपनियों का निंदनीय कृत्य

'रोगों का निर्माण' सिर्फ वयस्कों पर ही असर नहीं डालता बल्कि यह आपके बच्चों पर भी निशाना साधता है। एक नई पुस्तक बोर्न विद ए जंक फूड डेफिशिएंसी फ्लैक्स, क्वैक्स एंड हैक्स पिंप द पब्लिक हेल्थ बड़ी-बड़ी दवा कंपनियों की कलई खोलते हुए उनके राज बताती है कि किस तरह इनकी साजिश के तहत मनुष्य की सबसे कमजोर कड़ी, उनके 'मासूम बच्चे' जाल में फंस जाते हैं। अल्ट्रानैट के अनुसार 'बाल मनोचिकित्सा' जो कभी एक साधारण सी विशेषज्ञता मानी जाती थी, आज फार्मा इंडस्ट्री के लिए एक अत्यंत सक्रिय तथा लाभदायक बाजार बन चुकी है।

सीजोफ्रीनिया जैसी बीमारी से लेकर चिड़चिड़ेपन तथा तुनकमिजाजी तक, दवा कंपनियों के पास हर एक बच्चे के लिए कोई न कोई गोली या दवाई है। यह सब एक अच्छी मार्केटिंग का ही नतीजा है कि आज का एक छोटा बच्चा तक मनी बम में परिवर्तित हो गया है लेकिन यह हुआ कैसे? मेडिकल रीप्रेजेंटेटिव जेन ऑलसेन कहते हैं कि यह बहुत ही आसान है –

'बच्चों को स्कूलों में छोटी-मोटी तकलीफों के लिए मेडिकल रूम से दवा लेने के लिए दबाव डाला जाता है। घरों में दवाएं लेने के लिए उन माता-पिता व अभिभावकों का भी दबाव होता है। वहीं अस्पताल जाने पर डॉक्टर भी उन पर दवाएं लेने को लेकर मानसिक दबाव डालते हैं। इस तरह से बच्चे एक आदर्श मरीज बन जाते हैं अर्थात् वे दवा कंपनियों के जीवनपर्यंत ग्राहक बन जाते हैं।

जेन के अनुसार, जो बच्चे शुरू में एडीएचडी, बायपोलर या किसी अन्य मानसिक रोगों की दवाइयां लेते हैं और बाद में ठीक हो जाते हैं। वे बहुत ही सुचारू रूप से जीवन निर्वाह करते हैं, लेकिन इन बच्चों में भी जीवन भर इन मानसिक रोगों को लेकर एक बहुत बड़ा भय समाया रहता है, जो इनके मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास पर भी हावी हो जाता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बचपन में ली गई दवाइयों का दुष्प्रभाव उनकी जिंदगी के हर पहलू पर असर करता है।

एक नए शोध अध्ययन के अनुसार बच्चों को दी जा रहीं एलर्जी और अस्थमा की दवाइयों से मानसिक विकृति होने का खतरा बढ़ जाता है। जिन बच्चों के मानसिक रोगी होने का पता चलता है, वे न केवल हमेशा के लिए रोगी अपितु महंगे रोगी भी होजाते हैं। उनकी दवाइयों का मासिक व्यय दस हजार अथवा उससे भी अधिक हो सकता है। फार्मा इंडस्ट्री को नि:संदेह ही सरकार तथा अन्य लोगों की मदद मिल रही है। सरकार द्वारा चलाए गए नए-नए अभियान जैसे – पोलियो कैंपेन, शिशुओं की वैक्सीनेशन, अलग-अलग जरूरी क्लीनिकल टेस्ट आदि इन फार्मा कंपनीज का काम बहुत ही आसान कर देते हैं।

यह एक शर्मनाक बात है कि ज्यादातर मनोवैज्ञानिक सलाह लिखने में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपनी जानकारी अपडेट करने की भी जरूरत महसूस नहीं होती।

हाल ही में बीएमसी सायकाइट्री में प्रकाशित एक रिसर्च में पाया गया कि ज्यादातर गंभीर मानसिक रोगों से ग्रस्त किशोर व किशोरियों में विटामिन डी की कमी पाई गई है। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है क्योंकि विटामिन डी मानसिक वृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस रिसर्च के अनुसार विटामिन डी की कमी किशोर व किशारियों के मानसिक रोगी होने की संभावनाओं को चार गुना गढ़ा देती है। इस रिसर्च के अनुसार, मेंटल हेल्थ क्लीनिक में रहने वाले बच्चों में विटामिन डी की मात्रा बहुत ही खतरनाक ढंग से कम पाई गई। किशोरियों में इसकी मात्रा केवल 20 एनजी/एमएल तथा किशोरों में 10 एनजी/एमएल पाई गई। इसकी सामान्य रेंज 30 से 74 एनजी/एमएल है। कोई भी बच्चा, जो असामान्य मानसिक और व्यावहारिक लक्षण दिखा रहा है, उसे अपना विटामिन-डी लेवल चेक करवाना चाहिए। यहएक स्टैंडर्ड टेस्ट यानी मानक जांच होनी चाहिए परंतु डॉक्टरों और मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे नजरंदाज किया जा रहा है। कई शोध अध्ययनों ने यह साबित किया है कि विटामिन डी की कमी को दूर करने के बाद कई मानसिक रोगियों में सुधार आ गया।

सार यह है कि आप अच्छे आहार, व्यायाम, नींद और सकारात्मक सोच से किसी भी 'शोकावस्था' से आसानी से बाहर आ सकते हैं जो कि आगे चलकर मानसिक असंतुलन का कारण बन सकती है।

The Heritage of Swami Dayanand Saraswati

- B. R. Sharma Vibhakar

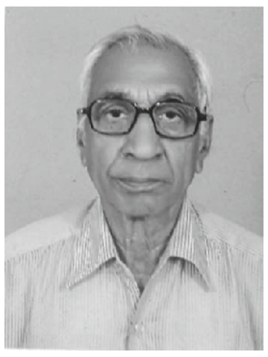

Swami Dayanand Saraswati was born in Tankara of Maurvi State in Saurashtra province. On Falgun Badi Dasmi every year his birthday is celebrated with great zeal. On falgun badi chaudas or the day of shiva Ratri is regarded as a day of 'Rishi Bodhotsva'. As a teenager his soul got illumined. An idea struck in his mind that there must be some other Shiva except this one made of stone, who utterly failed to defend himself from the mischief of a mouse to pollute the pindi of Shiva and stale the offerings. Look at the Vishtha and urine of the mouse making it dirty!

Actually, there was a custom (still rampant) in those days that everyone might be on fast and awoke throughout the night known as the Shiva Ratri. Mool Shankar (Swami Dayanand's earlier name) kept on awaking and watching the Shiva-Ling. He found there was no activity of Shiva-Ling, it was just in an actionless posture. It was dead sure that it was lifeless. Mool Shankar came to this conclusion that it was not a real and living Shiva. It is a fallacy, a wrong notion, a blind concept. So damn this artificial Shiva! He was certainly illumined by projecting arguments and the lagic in his mind and he started to quest and question as to where the Real Shiva was! An idea of detachment overpowered his mind.

When his father Sh. Kishan saw Mool Shankar's tendency of detachment and renunciation, he wanted to get him enchained with marriage. But one, who is a searcher for the Truth, could be enchained so? On one night he left his house when he sensed his bondage. He met many hinderances but continued to pass over them to have an horizon of Knowledge. He met many scholars and saints and discussed many questions and secrets of yoga. He went to a renowned Sanyasi named Swami Poornanand Saraswati who gave him a name of Swami Dayanand Saraswati. Now he was Swami Dayanand Saraswati to be addressed. He studied the Vedic Literature which stands by the logical appreciation. He kept aside all that was intermixed. He was widely studied person. Some body suggested him to see and get guidance from a blind Sanyasi named Virjanand Swami, who was known as the bright and illumined 'Sun of Sanskrit Grammar', in Mathura city.

When Swami Dayanand a young sanyasi of sterdy body and logical brain knocked the door of Virjanand Swami, a voice came from inside with a question 'Who is there?' Swami Dayanand instantly replied, 'I have come to know sir this one as to who am I? In search of myself' I have come into your wisdom's light. The great Guru was astonished and sparkled and murmurred- 'Oh! welcome! I was really in search of such an appropriate pupil who could learn something important from me. So I am utterly pleased to have you, dear. What a fine, perfect and unparalled meeting between the Acharya and would be pupil it was!

Swami Dayanand started learning from Guru Deo Swami Virjanand Saraswati and enriched himself under his guidance. He was most dear to Acharya because of his unique calibre. He proved himself to be the truest and most failthful. He turned to the real path leading to the Real Shiva. He wrote many books and the Satyartha Prakash was one of them to declare its uniqueness with a commanding tone. Its every approach is everlasting and unbeaten. Nobody can challenge its contents. He in times of British yoke brought about the light and enthusiasm to show the path of independence to Indians and he produced many youngsters to fight the case of freedom. All the movements were imbibed with the essentials of his philosophy. Swedeshi Andolan is his product which lator on Gandhi Ji adopted. He taught us to be free without any bondage. Rana De was his first disciple.

He wrote many books in Hindi language as he declared at first that Dev Nagri (Hindi) will be the National language of Bharatvarsh.

He gave us all the perspectives of Vedic Religion and founded Arya Samaj, a body of logic and devotion. It was more helpful in achieving freedom. Having a national character there was a flood of establishing many Arya Samaj Mandirs almost in every town and city in the country and abroad. Through discussions held with other sects and matavalambis a norm of Vedic religion was set-up. They contain the glorious chapters of victories.

As a matter of fact, we have got this Maharshi Dayanand's vision which is regarded as the real heritage making a dialogue of our Vedic culture. He declared firmly 'Return to the Vedas'.

आर्यरत्न श्री सरदारी लाल आर्य जी का ९२ वर्ष की आयु में निधन

आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के कर्मठ कार्यकर्ता, आर्यनेता एवं पदाधिकारी आर्यरत्न श्री सरदारी लाल आर्य जी का विगत दिनों 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री सरदारी लाल आर्य जी पुरानी पीढ़ी के उन प्रमुख आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में से एक थे जिन्होंने सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया। आर्य समाज संगठन के लिए उनके द्वारा किये गये कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें आर्य रत्न सम्मान से भी सम्मानित किया गया था। अपनी समाजसेवा की कार्य क्षमता के आधार पर ही वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री, उपप्रधान एवं कार्यकारी प्रधान रहे। उन्होंने आर्य समाज संगठन के कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के अतिरिक्त जालन्धर नगर निगम में पार्षद के रूप में तथा कांग्रेस पार्टी के सक्रिय सदस्य बनकर राजनीतिक रूप से भी समाजसेवा का कार्य किया। ऐसे वयोवृद्ध आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता द्वारा जीवन में किये गये आर्य समाज तथा समाजसेवा के कार्यों से आज की युवा पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री सरदारी लाल जी का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आर्यरत्न श्री सरदारी लाल आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें।

फरीदाबाद, हरियाणा के श्री ओम प्रकाश सेठी जी का देहावसान

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ओम प्रकाश सेठी जी का 85 वर्ष की आयु में विगत 19 फरवरी, 2022 को अचानक निधन हो गया है। वह पुरानी पीढ़ी के उन प्रमुख आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं में से एक थे जिन्होंने सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया तथा स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के साथ मिलकर लम्बे समय तक आर्य समाज संगठन को सुदृढ़ बनाने तथा उसके प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य समय एवं सहयोग प्रदान किया। वह स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा गठित की गई 'आर्य सभा' के भी सक्रिय सदस्य रहे और स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में चलाये गये गोरक्षा, हिन्दी, शराबबन्दी आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया और जेल भी गये। ऐसे वयोवृद्ध आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता द्वारा जीवन में किये गये आर्य समाज तथा समाजसेवा के कार्यों से आज की युवा पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री ओम प्रकाश सेठी जी का निधन आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता श्री ओम प्रकाश सेठी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम् – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन– पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई

हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने आह्वान किया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी वेदों पर शोध करें

स्वामी दयानन्द जी के शिक्षा दर्शन में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है – स्वामी आर्यवेश

कार्यक्रम में सीकर, राजस्थान के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, रोहतक के सांसद डॉ. अरविन्द शर्मा जी व प्रान्तीय सभा के प्रधान मा. रामपाल आर्य जी आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने मंच संचालन का दायित्व निभाया

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव का कार्यक्रम दिनांक 26 फरवरी, 2022 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा के टैगोर सभागार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद, स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, डॉ. अरविन्द शर्मा सांसद, मा. रामपाल आर्य, विश्वविद्यालय की प्रथम महिला प्रिंसिपल शरणजीत कौर, रजिस्ट्रार प्रो. गुलशन लाल तनेजा, कुलपति के सलाहकार पो. ए.के. राजन, पं. बी.डी.एस. स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की कुलपति पो. अनिता सक्सेना, पं. लख्मीचंद सुपवा के वी.सी. श्री गजेन्द्र चौहान, बी.एम.यू. के कुलपति पो. आर.के. यादव, डॉ. राज कुमार यूथ वेलफेयर विभाग के डीन के अतिरिक्त अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महामहिम राज्यपाल एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने विद्वत् सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि भाग लिया। राज्यपाल ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने वैदिक शिक्षा को प्रमुखता दी। आज जरूरत है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के शोधार्थी वेदों पर शोध कर वेदों में समाहित ज्ञान से पूरे विश्व को आलोकित करें। महामहिम ने कहा कि नई शिक्षा नीति में नैतिक मूल्यों की शिक्षा, रोजगारोन्मुखी शिक्षा व वैज्ञानिक सोच पर विशेष बल दिया गया है। ये सारे मूल तत्त्व स्वामी दयानन्द जी के शिक्षा दर्शन को परिलक्षित करते हैं। विश्वविद्यालय मानव निर्माण यानी 'मैन मेकिंग मिशन' का केन्द्र बने, ऐसा संकल्प होना चाहिए। राज्यपाल महोदय ने मातृभूमि व मातृभाषा के प्रति प्रेम की भावना विद्यार्थियों में जागृत करने की बात करते हुए अनुशासन तथा चरित्र निर्माण पर विशेष रूप से कार्य करने पर जोर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के इस कार्यक्रम में उद्‌बोधन देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी समग्र क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के शिक्षा दर्शन में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी एक क्रांतिकारी एवं समाज सुधारक थे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके एक क्रांतिकारी संगठन तैयार किया और सभी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सिंह गर्जना की। उन्होंने विविध सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया और स्वतंत्रता आन्दोलन का शंखनाद किया। स्वामी दयानन्द जी से प्रेरित होकर आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और देश को आजाद कराया। आर्य समाज के इतिहास को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों को जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता है कि विश्वविद्यालयों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों को दी जाये। स्वामी जी ने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति अधूरी है। सरकारों को चाहिए कि अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति को स्थापित करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दें जिसके द्वारा मनुष्य का समग्र विकास हो सकता है।

इस अवसर पर सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी एक महामानव थे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने स्वदेशी की भावना को राष्ट्र में सुदृढ़ किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा दर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

लोकसभा सांसद डॉ. अरविन्द शर्मा जी ने कहा कि विद्यार्थियों को स्वामी दयानन्द जी के शिक्षा दर्शन से प्रेरणा लेते हुए चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पूर्व मंत्री श्री मनीष ग्रोवर ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सेवा भाव से कार्य करने की विशेष जरूरत है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी का जीवन तथा कार्य प्रेरणादायी है। कार्यक्रम का संचालन वैदिक अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. सुरेन्द्र कुमार जी ने किया। आगन्तुक अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद प्रो. राजकुमार जी प्रदर्शन अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

15वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

चलाया जा रहा आन्दोलन भी एक महायज्ञ है। क्योंकि उपकार का दूसरा नाम भी यज्ञ है। जिस कार्य के करने से प्राणी मात्र का कल्याण होता हो वह कार्य यज्ञ कहलाता है।

इस अवसर पर मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को बोध हुआ था। अतः हमें भी जीवन में अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. अमरजीत शास्त्री (अमेरिक), विशिष्ठ अतिथि इंजीनियर श्री सुनील देशवाल, अमेरिका से पधारीं श्रीमती विप्रा राठी व उनके परिवारजनों, श्री नरेंद्र नांदल एडवोकेट एवं श्री महावीर ठेकेदार आदि को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्य ने बताया कि यह यज्ञ स्वामी इन्द्रवेश जी के 85वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। 13 मार्च तक चलने वाले इसी यज्ञ में चारों वेदों के 20,000 से ज्यादा मंत्रों के माध्यम से आहुतियाँ दी जायेंगी। इस यज्ञ में वेद पाठ संन्यास आश्रम गाजियाबाद के ब्रह्मचारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ अभियान को समर्पित चारों वेदो का यह 15वाँ यज्ञ है। 13 मार्च स्वामी इन्द्रवेश जी के जन्मदिवस पर इस यज्ञ की पूर्णाहुति व वार्षिक समारोह का आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, स्वामी ब्रह्मानन्द, डॉ. रणबीर सिंह खासा, श्री विनोद हुड्डा, श्री जिले सिंह, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री प्रदीप कुमार, श्री अजयपाल, श्री बबरुभान, श्री रामेन्द्र आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

उद्‌घाटन के अवसर पर हुए विशेष यज्ञ में आहुति देने वालों में मुख्य यजमान के रूप में श्री ईश्वर सिंह, श्री अजय कुंडू, श्री महावीर ठेकेदार एवं श्री विनोद हुड्डा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।